



ISSN2321-5372



भारत स्वतंत्रता आंदोलन काल एक चिर स्मरणीय सुवर्ण युग था । रॉलट सत्याग्रह, खिलापत आंदोलन, असहयोग तथा चंपारण-सत्याग्रह जैसे अहिंसक अभियान, दांडी मार्च, करो या मरो, भारत छोडो (चले जाओ) इ. आंदोलन अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । सबसे महत्वपूर्ण थी, महात्मा गांधी की आत्मिक-सत्यपूर्ण प्रबलता । अत्यंत संयम धारण करते हुए सबके साथ चलते हुए अंग्रेजों को देश छोडने के लिए बाधक किया था । स्वातंत्र्योत्तर काल में उन्हींकी प्रेरणा को आधार बनाकर देश प्रगति करता हुआ ७५ साल पूर्ण कर चुका है ।

भारत की स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव पर आंतर भारती वंदन करती है ।

# आंतर भारती

ANTAR BHARATI

हिन्दी मासिक

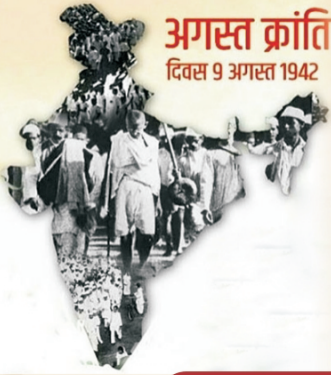
एकात्म भारत के पुनर्निर्माण के

युवा अभियान का सशक्त

अखिल भारतीय अभिव्यक्ति मंच

[www.antarbhharati.org.in](http://www.antarbhharati.org.in)

\* वर्ष : ६० \* अंक ८ \* अगस्त २०२३ \* १० रुपये \* वार्षिक : १०० रुपये \* आजीवन : १००० रुपये

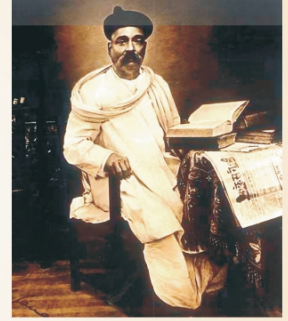


## अगस्त क्रांति

दिवस 9 अगस्त 1942

८ अगस्त १९४२ को भारत छोड़ो आंदोलन, ९ अगस्त १९४२ को अगस्त क्रांति दिन और इसीकी फलश्रुति के रूप में अगले ७ वर्ष स्वतंत्रता प्राप्ति तक भारतीयों में एक विशेष उत्साह का बीज म. गांधी ने बोया था । देशवासियों ने ऐक्य, धैर्य तथा सहिष्णुता का एक आदर्श उदाहरण इन सालों में रखा, फलतः आजादी हमें मिली ।

### स्वतंत्रता आंदोलन संबंधित कुछ चित्र





# आंतर भारती

## हिन्दी मासिक पत्रिका



आंतर भारती स्वप्नद्रष्टा  
साने गुरुजी



प्रेरक, संवर्धक संपादक  
स्व. यदुनाथ थत्ते

■ कार्यकारी संपादक  
प्राचार्य सुभाष वर्धमान शास्त्री  
सुदीक्षा, ९ इंडस्ट्रीयल इस्टेट  
होटगी रोड,  
सोलापूर - ४१३००३ (महा.)  
मो. ९८९०६११४०१  
E-mail : subhashvshastri@gmail.com

संस्थाध्यक्ष/पूर्व संपादक  
स्व. सदाविजय आर्य

■ प्रधान संपादक  
डॉ. सी. जय शंकर बाबु  
अध्यक्ष : हिन्दी विभाग,  
पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय, कालापेट,  
पुदुच्चेरी-६०५०१४  
मो. ९४४२०७१४०७  
E-mail : editor.antarbarhati@gmail.com



आंतर भारती साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति को  
सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता,  
प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है ।

विश्वस्त - कोषाध्यक्ष

Visit US : antarbarhati.org.in

प्रबंध कार्यालय

डॉ. उमाकांत चनशेटी

आन्तर भारती

मु.पो. बोरामणी ४१३२३८

जि.सोलापूर-४१३००३ (महा)

मो. ९५५२६३७९००

औरदा शहा. (महा.) ४१३५२२

संपादक

ज्योतिराव लढके

मार्गदर्शक

■ डॉ. इरेश स्वामी ■ अमर हबीब ■ पांडुरंग नाडकर्णी ■

सहयोगी - मधुश्री आर्य

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक/संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें ।



**ANTAR BHARATI** : A dream of Sane Guruji Committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the potentiality, Skills, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती ( मासिक पत्रिका) प्रकाशक कार्याध्यक्ष, आंतर भारती द्वारा मुद्रक मॉजिक पब्लिकेशंस लातूर के लिए मुद्रित कर आंतर भारती संकुल औरदाशहाजानी से प्रकाशित की ।

# आंतर भारती - अगस्त-२०२३

## इस अंक में

१) संपादकीय : संकटमुक्ति में ध्येयनिष्ठा की भूमिका	- ३
२) वेमना का तत्वज्ञान....	- ६
३) बसव वचन...	- ७
४) तिरुवल्लुवर वाणी...	- ८
५) सृजन का बाग खिलानेवाले साहित्यिक	- ९
६) रत्ती भर सुख	- १४
७) काकोरी घटना: एक बोध	- १६
८) वृद्धावस्था में व्यस्त रहे-मस्त रहे	- १७
९) प्रबोधन पर्व के प्रगल्भ, कृतिशील कार्यकर्ता	- १९
१०) पर्यावरण सुरक्षा के लिए विकास को बढ़ावा देना होगा	- २२
११) बोध कथा	- २४

## आंतर भारती पत्रिका - स्व. प्रा. सदाविजय आर्य स्मृति अंक

आंतर भारती पत्रिका का सितंबर २०२३ का अंक- स्व. प्रा. सदाविजय आर्य स्मृति अंक के रूप में प्रकाशित होगा ।

विशेषांक में प्रकाशनार्थ सदाविजय आर्य सर की स्मृतियाँ टाईप करके भेजिए ।

आर्य सर की स्मृति जगानेवाले बढ़िया स्मृति-चित्र हो तो भी जरूर भेजिए। (चित्र के साथ संदर्भ जरूर लिखें।)

अंतिम तिथि- १० अगस्त, २०२३ (चयनित सामग्री आवश्यकतानुसार प्रकाशित की जाएगी।)

■ अमर हबीब - ८४१९०९९०९ ■ डॉ.सी. जय शंकर बाबु - ९४४२०७१४०७

■ प्राचार्य. सुभाष शास्त्री- ९८९०६११४०९

## संकटमुक्ति में ध्येयनिष्ठा की भूमिका

— डॉ. सी. जय शंकर बाबु

साने गुरुजी भारतीय संस्कृति के अनन्य आराधक थे। वे समतामूलक समाज के लिए नींव के रूप में भारतीय संस्कृति को मानते हुए उसकी सरल व्याख्या करते हैं। उनकी कृति 'भारतीय संस्कृति' इसका सबसे बड़ा सबूत है। मानवता को प्रतिष्ठित कर न्याय, समता, सद्भावना को समाज में स्थापित करने के लिए वे लगातार प्रयास करते रहे हैं। उनकी लेखनी में इन प्रयासों की साफगोई तसवीर हमें मिल जाती है। साने गुरुजी के विचार आज भी कई गुणा प्रासंगिक हैं। उनकी एक-एक पंक्ति में उनके चिंतन और संकल्प की श्रेष्ठता को समझकर हमें व्यवहार में उतरने की आवश्यकता है। वर्तमान समाज की विडंबनाओं को मिटाने के लिए साने गुरुजी के दर्शन को जन-मानस में व्यवहार दर्शन के रूप में प्रसारित करने के कार्य में आंतर भारती सदा सक्रिय है।

संकटापन्न समाज को सबक सिखाकर संकट मुक्ति के लिए मनसा-वाचा-कर्मणा साने गुरुजी लगे रहते थे। आज हम आज़ादी का अमृतमहोत्सव मना रहे हैं। साने गुरुजी जैसे असंख्य कर्मठ योद्धाओं के त्याग, तपस्या, समर्पण, ध्येय निष्ठा और संघर्ष का सुफल यह भारत की

आज़ादी है। जन-जन की आशाओं के रूप में हासिल आज़ादी के फल हर किसी को सही मायने मिले, इसी दृष्टि से साने गुरुजी जैसे विचारकों ने जन-मानस में भारतीय उत्कृष्ट मूल्यों को प्रतिष्ठित करने के लिए जन-जन को दीक्षित किया है। दीक्षा की वह चेतना संकट की स्थिति में प्रकाशपुंज और ऊर्जा के रूप में मार्गदर्शक बन जाती है। विडंबनापूर्ण परिस्थितियों में किंकर्तव्य-विमूढ़ लोगों को सही दिशा दिखाने में आंतर भारती अपनी भूमिका निभाती रहती है। आंतर भारती के कार्यकर्ता ऐसी चेतना के प्रतिनिधियों के रूप में समतामूलक समाज की स्थापना की दिशा में कर्तव्यपरायण होकर आगे बढ़ेंगे।

'ध्येय की पराकाष्ठा' के शीर्षक से अपनी कृति 'भारतीय संस्कृति' में साने गुरुजी ने जो विचार दिया है, उनमें से दो चार पंक्तियों से वर्तमान परिस्थितियों में आवश्यक कर्तव्य निभाने की दिशा में मार्गदर्शन ग्रहण करने की हम कोशिश करेंगे। वे लिखते हैं कि भारतीय संस्कृति में एक-एक सद्गुण के लिए, एक-एक ध्येय के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देनेवाली महान विभूतियाँ दिखाई देती हैं। भारतीय संस्कृति मानो इन विभूतियों का ही इतिहास होता

है।... वे आगे यह भी लिखते हैं - भारतीय संस्कृति में त्याग और पवित्रता - इन दो गुणों का बहुत बड़ा स्थान है। भारतीय मनुष्य केवल पैसे को, केवल सत्ता को महत्व नहीं देता। ... भारतीय जनता ने कभी राजा की पालकी नहीं उठाई है; लेकिन संतों की पालकी को प्रतिवर्ष हजारों लोग उठाते हैं।...

आज़ादी के सुफल का स्वाद चखते हुए जिस दौर में हम अमृत महोत्सव की खुशियों में मग्न हैं, दूसरी तरफ़ विगत दो महीनों से लगातार मणिपुर हिंसा, अराजकता, अमानवीय विध्वंस के दंश से कांप रहा है। इसे मानवता के लिए बड़े कलंक के रूप में एक तरफ़ और दूसरी तरफ़ कानून और व्यवस्था की चुनौती के रूप में भी माना जा रहा है। जहाँ सभी मानव समुदाय को एक परिवार मानने की अपेक्षा के बीच भिन्न सामुदायिक वर्गों के बीच शत्रुता पैदा होना बड़े दुर्भाग्य की बात है। आपसी स्नेह, सद्भाव, भाईचारे की जगह वैमनस्य पैदा करने की किसी भी प्रकार की करतूतों की भर्त्सना की जानी चाहिए।

अपने समय में किन्हीं भी वर्गों के बीच जब वैमनस्य की स्थितियाँ पैदा हुईं, तो उसे समाप्त करने, समता, सद्भाव, स्नेह बढ़ाने की दिशा में तत्काल कदम उठाने के लिए साने गुरुजी तत्पर थे। ऐसी तत्परता की आज बड़ी कमी है। एक तरफ़ मणिपुर जलता रहा, मगर बड़ी विडंबना यह है कि

कई मौज़ मस्तियों में नज़र आते रहें। अपने पड़ोस में विध्वंस के तांडव को देखकर कोई नाच-गान करने लगे, उन्हें क्या कहा जाए? खैर, ऐसी विडंबनापूर्ण परिस्थितियों से मणिपुर मुक्त हो, मानवता की स्थितियों की बहाली हो, इस दिशा में हम सबको अपना योगदान सुनिश्चित करने की अपेक्षा है।

निष्कलंक चरित्र और अपार त्याग की प्रतिमूर्तियों की तारीफ़ में साने गुरुजी यह कहते हुए लिखते हैं कि लोगों के मन पर इन दोनों गुणों का महत्व अंकित करने के लिए भारत वर्ष में अपार त्याग किया गया है। वे रामचंद्रजी का उदाहरण लेते हुए लिखते हैं कि रामचंद्र जी ने ध्येय की पराकाष्ठा कर दी। एक ओर ध्येयवादी के रूप में प्रह्लाद का उदाहरण पेश करते हुए साने गुरुजी कहते हैं, यह ध्येयवादी प्रह्लाद हमेशा भारत को स्फूर्ति देता रहेगा। हम करेंगे - वंदेमातरम्, स्वराज्य, इंकलाब जिंदाबाद ! हम कहेंगे - साम्राज्यवाद का नाश हो ! पूँजीवाद का नाश हो ! फिर चाहे उस शरीर का कुछ करे। हमारा ध्येय हमारे जीवन में प्रकट होगा। जो होठों पर, वही मन में। जो हाथ में, वही आँखों में। .... सारी मानव जाति को सुखी करने की इच्छा करना मानो भगवान् का झंडा फहराना है। राजा हरिश्चंद्र, राजा शिवि, राजा हंसध्वज, सावित्री, गांधारी, भगवान बुद्ध, चैतन्य, पन्ना, राजा अशोक, राजा हर्ष, राणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, दादाजी कोंडदेव, बाजी प्रभु, तानाजी, संभाजी, बल्लाल,

दत्ताजी, माधवराव, न्यायमूर्ति रामशास्त्री, देवी अहिल्याबाई, रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे आदि कई विभूतियों की विशिष्टता का आख्यान, गुण-गान करते हुए साने गुरुजी कहते हैं कि यह है भारतीय परंपरा ! यह है ध्येय-पूजा ! भारत के प्रत्येक प्रांत में इस प्रकार की ध्येय-पूजा करनेवाले नर-नारी-रत्न सतत जन्म लेते रहे हैं । आज भी उस दृष्टि से भारत मरु नहीं बना है । परतंत्रता के सर्वभक्षक काल में भी भारत ने हमेशा ऐसे ध्येयनिष्ठ मनुष्यों को जन्म दिया है जो सबके हृदय में श्रद्धा का स्थान प्राप्त करने योग्य हैं ।

कंटक स्थितियाँ जहाँ भी उत्पन्न हो, वहाँ मानवता की प्रतिष्ठा के लिए हमें प्रतिबद्ध होने और वहाँ शांति, सुरक्षा, सद्भावना की स्थितियाँ स्थापित करने के लिए हमें कदम उठाने की आवश्यकता है । आज़ादी के अमृतकाल के दौर में देश के एक कोने में उत्पन्न घातक स्थितियाँ कलंक के रूप में नज़र आती हैं । ऐसी स्थितियों में मानवता की प्रतिष्ठा के लिए कदम उठाने में आंतर भारती के स्वप्नद्रष्टा साने गुरुजी का चिंतन सही मायने में प्रासंगिक है । आंतर भारती के कार्यकर्ता इसी चेतना और ध्येय निष्ठा से भाईचारा, मानवता के संदेश को लेकर संकट की स्थितियों में परिवर्तन के लिए अपनी भूमिका अवश्य निभाएंगे । पीड़ित मानवता के तमाम कष्ट यथाशीघ्र दूर

हों, मणिपुर में यथाशीघ्र शांति और सद्भावना की बहाली हो, लोग आपसी वैमनस्य को भूलकर एक दूसरे के प्रति प्रेम और सद्भाव दर्शाने की ध्येयनिष्ठा कर्मठतापूर्वक अपनाएँ... इसमें हम सब अपनी भूमिका अवश्य निभाएँ...

विश्व व्यापी वेब दिवस (१ अगस्त), विश्व स्तनपान सप्ताह (१-७ अगस्त), हिरोशिमा दिवस (६ अगस्त), मैत्री दिवस (६ अगस्त), राष्ट्रीय हथकरघा दिवस (७ अगस्त), अगस्त क्रांति दिवस, नागासाकी दिवस, अंतरराष्ट्रीय विश्व देशज जनता दिवस (९ अगस्त), भारतीय स्वतंत्रता दिवस (१५ अगस्त), अक्षय ऊर्जा दिवस (२० अगस्त), सद्भावना दिवस (२० अगस्त), बेगारी उन्मूलन अंतरराष्ट्रीय स्मरण दिवस (२३ अगस्त), महिला समता दिवस (२६ अगस्त), अंतरराष्ट्रीय ध्यान दिवस (२६ अगस्त), राष्ट्रीय खेल दिवस, ओणम, तेलुगु भाषा दिवस (२९ अगस्त), रक्षा बंधन (३० अगस्त) आदि पर्वों, विशिष्ट दिवसों के अवसर पर अग्रिम हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

कभी किसी का भरोसा ना तोड़े,  
क्योंकि यह एक बार टूट जाता है  
तो दोबारा नहीं जुड़ता है ।



## वेमना का तत्व-चिंतन तेलुगु मूल - योगी वेमना

(देवनागरी लिप्यंतरण, हिंदी अनुवाद एवं व्याख्या - डॉ.सी.जय शंकर बाबु)

पेरु सोमयाजि पेनुसिंह बलुडाए  
मेकपोतु बट्टि मेडनु विरुव  
कानि क्रतुवु वलन कलुगुना मोक्षंबु  
विश्वदाभिराम विनुर वेम ।

नाम 'सोमयाजि', वह बड़ा बलवान बन गया  
बकरे को पकड़ कर उसकी गरदन काट दिया  
न लायक क्रतु करने से मोक्ष मिलेगा क्या?  
विश्वदाभिराम ! सुनरे वेमा !

**व्याख्या** - नाम 'सोमयाजि' (याज्ञिक) है, वह बड़े बलवान जैसा तेवर दिखते हुए बकरे को पकड़कर निर्दयतापूर्वक उसकी गरदन को काट देता है। ऐसे दयाविहीन न लायक क्रतु (यज्ञ) से उसे मोक्ष कैसे मिलेगा? वेमना का मानना है कि दयाविहीन कार्यों को 'यज्ञ' की संज्ञा देना ही निरर्थक है, ऐसे अकृत्यों को क्रतु मानना और उससेमोक्ष की आशा करना बड़ी मूर्खता है।

## महात्मा बसवेश्वर वचन

॥ मूळ कन्नड वचन ॥

जगदगल मुगिलगल निम्मगल  
पाताळदिंदत्त त्त निम्म श्रीचरण  
ब्रह्मांडदिंदत्तत्त निम्म श्रीमुकुट  
अगम्य अगोचर अप्रतिम लिंगवे  
कूडल संगमदेवय्य एन्न करस्थळ के  
बरु चुळकादिरय्य



### हिंदी काव्यानुवाद

जग से परे आकाश से परे आपका होना है  
पाताल से भी गहरे आप के श्रीचरण  
ब्रह्माण्ड से परे आप का श्रीमुकुट  
अगम्य अगोचर अप्रतिम लिंग  
कूडल संगम देव, मेरे लिए सूक्ष्म होकर  
मेरी हथेली में समा गए आप

### सारांश

ईश्वर का सर्वव्यापित्व जितना हमें दिखाई देता है। उतना ही नहीं तो उससे भी परे जितना हो सकता है। उन सब में वह है लेकिन मेरी सीमित दृष्टि की क्षमता के लिए हे कूडल संगम देव आप सूक्ष्म रूप धारण कर हथेली के अगम्य-अगोचर अप्रतिम इष्टलिंग बन गए मेरे लिए !

डॉ इरेश सदाशिव स्वामी

विद्या, १२ ब्रह्मचैतन्य नगर,

विजयपुर रस्ता, सोलापूर-४१३००४

भ्रमण : ९३७१०९९५००



## तिरुवल्लुवर वाणी तिरुक्कुरल

तमिल मूल - संत तिरुवल्लुवर

(देवनागरी लिप्यंतरण, एवं हिंदी हाइकु  
अनुवाद - डॉ.सी.जय शंकर बाबु)

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)

तुरवरवियल् (संन्यास-धर्म)

अध्याय २६. पुलाल् मरुत्तल् (मांसाहार त्यागना)

पडैकोण्डार् नेञ्जम्पोल् नन्ऱूक्कादु ओन्ऱन्  
उडल् शुवै उण्डार् मनम् । (कुरल - २५३)

हिंसक शस्त्र,  
मांसभक्षण, मन  
दयाविहीन ।

**भावार्थ** - प्राणि को मारकर अपने पास वह अस्त्र रखने वाले व्यक्ति के मन हिंसा भाव का निवास होता है । जीव की हत्याकर उसका मांस भक्षण करने वाले व्यक्ति में करुणा और दया की भावना मिलती ही नहीं । तिरुवल्लुवर का यह मानना है कि हिंसक कार्य करने वाले जिस हथियार का इस्तेमाल करता है, उसका हृदय भी उसी लौह के हथियार के समान कठिन होता है, जीव के मांसभक्षक का हृदय दयारहित ही बनता है ।

अरुळ्ळदु योदेनिल् कोल्लामे कोरल्  
पोरुळ्ळदु अक्वन् तिनल् । (कुरल - २५४)

जीव-हत्या औ  
मांसभक्षण बड़े  
अधर्म कृत्य ।

**भावार्थ** - जीव-हत्या बड़ा अधर्म है । खुद जीवों को न मारने का तर्क देकर उनके मांस को खाना तो बड़ा ही अधर्म कर्म है । तिरुवल्लुवर का कहना है कि दयाविहीन बन कर जीवों को मारना बड़ा पाप है, उनका मांस खाना उससे बड़ा निकृष्ट कृत्य है ।

## सृजन का बाग खिलानेवाले साहित्यिक

- जॉन गोन्साल्विस

'सृजन' की निर्मितीसंबंधी कविवर बा.भ.बोरकर की एक सुन्दर कविता है।

देखणे ते हात  
त्यांना निर्मितीचे डोहाळे,  
मांगल्याने गंधलेले  
सुन्दराचे सोहळे  
देखणी ती पाऊले  
जो ध्यास पंथे चालती  
वाळवंटातून जाता  
स्वस्तिपद्मे राखिती

महाराष्ट्र के ज्येष्ठ विचारशील व साहित्यिक फादर फ्रान्सिस दिब्रिटो की साहित्यिक यात्रा इन पंक्तियों में झलक रही है। साहित्य निर्माण के पीछे आन्तर प्रेरणा प्रभावित होनी आवश्यक है। साथ ही बाह्य प्रेरणा भी स्फूर्तिदायक, प्रेरणादायी होनी आवश्यक है। फादर दिब्रिटो के जीवन पर इन दोनों प्रेरणाओं का प्रभाव पडा नजर आता है।

वसई की भूमि अर्थात वहाँ की सामवेदी बोली जैसे- 'कुणब्यॉसॉ पुता झुपिलो नांगर महिलो आगर जायफळॉसॉ इस वसई की सुजलाम् सुफलाम् भूमी का किसान पुत्र ! इस नभ तथा भूमि ने दान दिया है और इस मिट्टी से फादर दिब्रिटो जैसे साहित्यरत्न, अंकुरित-विकसित होकर

खिले। उस साहित्य पुष्पकी गंध पूरे महाराष्ट्र में फैली इस किसान पुत्र ने मराठी साहित्य के आंगन में अपनी भाषा के प्रभुत्व के बल पर मुक्त संचार किया। वे केवल ईसाई धर्मसेवक ही नहीं थे। ईसाई प्रवचनकार ही नहीं अपितु उत्तम साहित्यिक है।

### शब्दों की साधना

पाठशाला का शिक्षण पूरा होने पर उन्होंने धर्मगुरु होने के लिए गुरुविद्यालय की कूसधारी राह चुनी। अमेरिकन कवि रॉबर्ट फ्रॉस्ट The Road Not Taken की कविता है, उसमें वे कहते हैं।

Two roads diverted in a wood and I look the one less traveled by and that has made all the difference अर्थात जंगल में दो रस्ते दो दिशाओं में जा रहे थे, मैंने कम राहदारी वाली राह चुनी। जीवन में जो बदलाव हुआ वह उसीके कारण हुआ। फादर दिब्रिटो ने धर्मगुरु बनने का निर्णय लिया यहीं उनके जीवन का साहित्यिक मार्ग प्रारम्भ हुआ। पुना-मुंबई घर के कारण बड़े बड़े साहित्यकारों का साथ तथा मार्गदर्शन मिला।

ज्ञानेश्वर मारुली के शब्दों में कहे तो फायर दिब्रिटो का जीवन " ग्रंथोपजीविये

“ बना । चारों तरफ, सर्वस्पर्शी उद्योगी वाचन को मनन-चिंतन-मंथन की साथ मिली । उनको प्राप्त वैविध्यपूर्ण अनुभव की गठरी में से अक्षर रचना प्रारम्भ हुई । सूक्ष्म, चंचल, भावपूर्ण निरीक्षणशक्ति के आधारपर उन्होंने अपने जीवन में शब्दपुष्पों की बगिया सजाई । कभी-२ उनके शब्द मोम जैसे नर्म या फूलों से कोमल होते थे।

साच आणि मवाळ, मितले आणि रसाळ !

शब्द जसे कल्लोल अमृता चे ॥

(सच्चे और मृदु, परिमित और रसपूर्ण शब्द जैसे कोलाहल अमृत का)

तो कभी समाज के दुःख, दीनता, दहशत, अन्याय देखकर अनेक शब्द वज्रसे भी कठोर होकर लहराती पत्तियों जैसे तेजस्वी तथा धार धार बनते ।

संत तुकोबा के शब्दों में कहे तो

आम्हां घरी धन, शब्दांचीच रत्ने ।

शब्दांचीच शस्त्रे, यत्ने करू ॥

(हमारे घर पर धन, शब्दों के रत्न तथा शब्दों के ही शास्त्र हैं - हम प्रयत्न करें)

जीवनभर शब्दों की साधना की तथा उसी के कारण शब्द प्रसन्न हो गए ।

### **मराठी भाषा से संबध जुडा**

“ सृजनाचा मळा ” इस अपनी पुस्तक के पृष्ठ ४१ पर लिखते हैं कि “स्वच्छन्द बच्चों की तरह संस्कृति के बच्चे

मातृभाषा की धरती पर खूब गहरे जाते हैं ” । दिब्रिटो ये मातृभाषा का सम्मान करने वाले साहित्यिक हैं । वे ईसाई धर्मगुरु हैं, फिर भी मराठी भाषा, मराठी संस्कृति, मराठी परंपरा पर निंतात श्रद्धा रखते हैं । मराठी भाषा से असीम प्यार है इसलिए मराठी भाषा के शब्दों पर अद्भुत प्रभुत्व है । मातृभाषा के बारे में कमाल का स्वाभिमान उनके नस-नस में भरा है । कलेजे में छाया हुआ है । उनकी धमनियों में मराठी भाषा का ही रक्त प्रवाहित हो रहा है । उन्हींके शब्दों में कहें तो, “ संस्कृति के सर्वांगीण दर्शन करने के लिए भाषा का सांगोपांग ज्ञान आवश्यक है । केवल शब्दों का प्रयोग ही भाषा नहीं, भाषा आत्मा की पुकार है । भाषा से दूरी अर्थात संस्कृति से तलाक समझें । भारतीय संस्कृति से नाता बनाने के लिए मातृभाषा से नाल जोडनी आवश्यक है । ” (परिवर्तनासाठी धर्म’ पृष्ठ क्र १०९)

मातृभाषा के विकास के लिए, संवर्धन के लिए उन्होंने गहरी आत्मीयता से अपने भाषणों में, लेखन में इस मुद्दे को रखा है । अंग्रेजी भाषा धन की तो मराठी भाषा मन की भाषा है । उसके लिए सुवार्ता मासिक के सम्पादक रहते समय उन्होंने नये नये विविध उपक्रम मराठी भाषा के संवर्धन के लिए आयोजित किए । शिक्षा के माध्यम के बारे में उनकी भूमिका स्पष्ट करते समय पुणे में आयोजित मराठी-ईसाई साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण में बोलते हुए

वे बोले " शिक्षा का माध्यम परभाषा करने से बालबुद्धि पर कमाल का तनाव पडता है, अनजाने में पश्चिम की संस्कृति के संस्कार उनपर पडते है। जिस आयु में छोटे बच्चों को मां की गोदी में खेलना चाहिए, उस समय दाई की गुलामी में जकडे जाते है। इसलिए अपनी स्वसंस्कृति से दूर चले जाने का डर पैदा हो गया है।

बायबल और प्रभु ईसा की सीख का जैसा उनके जीवन पर प्रभाव वैसा ही संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव, संत तुकाराम, संत एकनाथ या भागवती संतों के विचारों का प्रभाव है। ईसाई (ख्रिस्ती) धर्म संप्रदाय के संत अगस्तीन, संत फ्रन्सिस झेवियर, असिसि के संत फ्रान्सिस, संत मदर तेरेसा, संत पोप जॉन पॉल द्वितीय की विचारधारा पर वे मंत्रमुग्ध हो जाते हैं, उनकी संतविचारों की अभ्यासक प्रवृत्ति के लिए महाराष्ट्र राज्य शासन ने उन्हें "संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम पुरस्कार" देकर सम्मानित किया। इस तरफ दुर्लक्ष नहीं गिा जा सकता। कविश्रेष्ठ ग.दि माडगूळकर की काव्यपंक्तियों में कहना हो तो

ज्ञानीयाचा तुकोबांचा तोच माझा वंश आहे,  
माझिया रक्तात काही ईश्वराचा अंश आहे।  
ज्ञानियों, तुकोबा का ही मेरा वंश है।  
मेरे रक्त में कुछ ईश्वर का अंश है।

### साहित्य संपदा

फादर दिब्रिटो ने मराठी साहित्य

सरिता के प्रांगण में "पथिकाची नामयात्रा" करते हुए 'आनन्दाचे अंतरंग' पैदा करने के लिए, 'परिवर्तनासाठी धर्म' यह भूमिका हाथ में लेकर सुबोध बायबल वाचकों के मन में सृजन का बाग खिलाते हुए, विचारों के तरंग उठाते हैं और अपनी स्वयंभू तेज के कदम धरती पर पडते हैं, आशा की दहलीज लांगते हुए "ओअंसिस की खोज में" निकला हुआ यह पथिक साधारण जनता को ईसा की कहानी कहते हुए "ईसाई त्योहार और उत्सव की महानता अधोरेखित करते हुए, पर्वत पर के प्रवचन से प्रभावित हुआ। मदर तेरेसा से "पोप दूसरे जॉनपॉल" इस भव्य दिव्य तेज, पुंज, जीवित संत विभूतियों से हस्तांदोलन करते हुए अमृतस्पर्श उन्होंने अनुभव किया। श्रद्धामय ख्रिस्ती (ईसाई) जीवन जीते हुए "सामर्थ्य है प्रार्थना में" इसकी अनुभूति लेकर "येशू के साथ चालीस दिन" यात्रा की। तब "संघर्ष यात्रा ख्रिस्त-भूमि" में वे पहुंचे, उस समय उन्होंने "यह राह स्वर्ग की" अनुभव की। युवावस्था में पदार्पण करने वाली तरुणाई को "श्रृंगार, मैत्री और प्रीति" में अन्तर स्पष्ट करते हुए अपनी मातृभूति तथा मातृभाषा से "कृतहन" न बने यह भावना भी उनके मन में डाली "सृजनाचा मोहोर खिलाने के लिए पर्यावरण संभालना होगा सबके सहकार्य से "नाही मी एकला" यह आत्मविश्वास प्रगट करते हुए अपने चारों तरफ सर्वधर्म "गोतावळा" (सम्मेलन)

पैदा करके उसमें रम जाने वाले शब्दों के पुजारी हैं ।

### लालित्यपूर्ण ललितबंध

सकस संतुलित जीवनानुभव, कलात्मक, काव्यात्मक रचनाएं करने वाले फादर दिब्रिटो के ललित लेख, होते हैं । मिट्टी, प्रकृति, मनुष्य, संस्कृति आदि से रिश्ते स्थापित करने वाले लेख अकृत्रिम शब्दों का गुच्छा, ओजस्वी रसपूर्ण मधुर भाषा की मिठास, प्रकृति के नयनो को लुभाने वाले साज, मनुष्यता की आशा इन सब के बिंब प्रतिबिंब यानी फादर दिब्रिटो के " तेजाची पाऊले" (अक्षर प्रकाशन) तथा सृजनाचा मळा (राजहंस प्रकाशन) आदि ललित बंध शब्द फूले हैं, एकाध फूल के झाड पर सूर्य किरण के स्पर्श से कलि विकसित होने जैसी सहजता, नैसर्गिकता आदि उनकी ललित पूर्ण रचना में खिलता है और जाते जाते बकुल के फुल जैसा वैचारिक सुगंध का इत्र छिडक जाता है । आकाश से गिरने वाली पर्जन्यधारा अर्थात परमेश्वर की अपार करुणा की वर्षा लगती है। " प्रकाश यह कर्तव्य कठोर पिता जैसा तो अंधेरा स्नेह पूर्ण माता जैसा लगता है (सृजनाचा मळा पृष्ठ ३९) वे अंधेरे को सखा, साथी, साथीदार, संवादकर्ता तथा अन्तर्मन के द्वार खोलने वाली चाबी मानते हैं। अंधेरे के बडप्पन का वर्णन करते समय फा दिब्रिटो लिखते हैं, " वास्तविक अंधेरा

यह मानव का बहुत बडा सखा है । गर्द अंधेरे में ही मनुष्य की शायद विलक्षण प्रगति होती है । नौ महीने के अंधकारवास में ही एक अप्रतिम आकार साकार होता है । उसे समग्र अंधेरे का ही सच्चा आधार होता है । अंकुरित होने के लिए बीज को भी अंधेरे के अधीन होना पडता है । कुछ समय मिट्टी में ही पडा रहना पडता है । कुछ समय उसके नीचे कालीख में भी । (तेजाची पाऊले पृष्ठ ५९)

ये ख्रिस्ती धर्मगुरु केवल चर्च की चारदीवारी में देव तथा देवत्व के दर्शन नहीं लेते अपितु बिना दिवार के खुली जगह पर प्रकृति की शाला में भी इशारे देखते हैं, प्रकृति का विलक्षण वर्णन करते हुए कहते हैं, कोयल के कंठ में और कमल की डंडी में तेज जलधारा में और शान्त शीतल वायु में गर्मी की लू में और शरदचांदनी में केवडे के पतेमें और दीए की बत्ती में, योगियों के गहन चिन्तन में और गर्भस्थ शिशु में यौवन की मोहक मुस्कान में तथा महारोगियों के गले-सडे जख्मों में तुम्हें कभी देव के, दिव्यत्व के दर्शन हुए नहीं ? दिव्यरस में तुम्हारा जीवात्मा भीगा नहीं ? सौंदर्य का साक्षात्कार हुआ नहीं ? पर्वतों के प्रवचन और झरनों का संगीत तुम्हारे कानों में नहीं पडा ? तो फिर तुम्हों जीवन क्या है पता नहीं लगा (तेजाची पाऊले पृष्ठ ८९) इनमें उन्हें जीवन का व्यापक अर्थ दिखाई दिया । उनके सब ललित निबन्ध प्रेयस की ओर से श्रेयस की ओर, द्वैत से अद्वैत की ओर और

आत्मानुभूति से समष्टि की तरफ जाते हैं।

जीवन का प्रत्येक क्षण, प्रत्येक घटना, प्रत्येक प्रसंग वे समरस होकर जिए उन्हीके शब्दों में कहना हो तो " मुझे जीवन से एक ही अपेक्षा है कि मैं प्रत्येक क्षण पूर्ण रीति से जीऊँ क्योंकि प्रत्येक क्षण अर्थपूर्ण तथा महत्वपूर्ण होता है। उसके हृदय में लाखों स्वप्न कलियां छिपी होती हैं। प्रत्येक क्षण अनंत आशा का होता है (सृजनाचा मोहोर)

### हृदयंगम "पथिकाची नाम यात्रा"

पथिक की नाम यात्रा (The way of the pilgrim ) यह पुस्तक १८५३ से १८६१ इस कालखंड में रशिया के ऑरैल प्रान्त से सैबेरियातक येशू ख्रिस्त का नामस्मरण करते हुए पदयात्रा करने में पूरा जीवन बितानेवाले एक अनाम रशियन पथिक की नामयात्रा का निवेदन इस पुस्तक में है। ख्रिस्ती धर्म में पवित्र माना हुआ माऊंट एथोस इस ग्रीस के पर्वत पर रहनेवाले एक तपस्वी मठवासी के हाथ में यह आत्म निवेदन की हस्तलिखित पोथी पड़ी। १८८४ में प्रथम रशियन भाषा में उसका प्रकाशन हुआ। उसके बाद संसार की सर्व प्रमुख भाषाओं में अनुवाद हुआ इस ग्रन्थ का सुबोध सरल, अर्थानुसार मराठी अनुवाद फादर दिब्रिटो ने 'पथिकाची नामयात्रा' इस नाम से किया है (१९७२)

पुस्तक में कुल दो विभाग है उनमें

कुल सात प्रकरण है। उसमें से पहले विभाग से पहले विभाग के चार प्रकरण उनके प्रत्यक्ष भ्रमणगाथा के हैं तथा दूसरे विभाग के तीन प्रकरणों में उनकी नामयात्रा चलती हुई वर्णित है। ये तीन प्रकरण संवादात्मक है। आध्यात्मिक जीवन में नामस्मरण का महत्व अधोरेखित किया है। इस पुस्तक को ग.वि तथा काकासाहेब तुळपुळे की मर्मग्राही प्रस्तावना प्राप्त हुई है। इस पुस्तक का परीक्षण करते हुए " तरुण भारत" के तत्कालीन सम्पादक ग.त्र्यं माडखोलेकर लिखते हैं कि 'रेव्ह, दिब्रिटो की भी " पथिकाची नामयात्रा (पथिक की नामयात्रा) पढते हुए मराठी वाचकों को अपने एकाध वारकरी संप्रदाय के साधक के अनुभव ही हम पढ रहे हैं ऐसा लगोगा और नामस्मरण यह मनुष्य के श्वासोच्छ्वास का सहज व्यापार हो जाना यह सिद्धि कितनी दुःसाध्य है, इसकी कल्पना आ जाएगी। (अपूर्ण)

जिंदगी में किसी से  
अपनी तुलना मत करो,  
जैसे चांद और सूरज की  
तुलना किसी से नहीं की जा  
सकती क्योंकि यह अपने  
समय पर ही चमकते है।

## रत्ती भर सुख

- दिनेशचंद्र मनयां

**सुख के प्रत्येक तोले के साथ सेर भर दुःख भी आता है।**

### स्वामी विवेकानंद

आज की भागदौड़ भरी जिन्दगी में हर व्यक्ति को दरकार है रत्ती भर सुख की। एक समय था जब मिडिल पास कर लेने का मतलब होता था शिक्षित कहलाना। परन्तु आज कितनी भी शिक्षा क्यों न ले ली जाय परन्तु कोई भी व्यक्ति यह कहते नहीं सुना गया कि 'मैं शिक्षित भी हूँ और सुखी भी।

कारण जो भी हो परन्तु रत्ती भर सुख की आशा में व्यक्ति सारा जीवन तमाम परेशानियों को झेलता हुआ वृद्धावस्था को प्राप्त कर लेता है, एक पल के लिए भी सुखी महसूस नहीं कर पाता है। वास्तव में सुख की कोई परिभाषा भी नजर नहीं आती है। कहीं पढ़ा था जिन्दगी क्या है? सोच है और उदास हो जाँ। सुख का न तो कोई थर्मामीटर बना है और न ही कोई पैमाना। क्षणिक सुख के लिए सारा जहा मृगतृष्णा की तरह भटकता रहता है। एक दोहा है कस्तूरी कुंडल बसे मृग दूँदें वन माँहि, ऐसे घट घट राम हैं दुनियाँ दूँदें नाहि। परन्तु एक अनुभूति है सुखधार्मिक ग्रंथों, मनीषियों के प्रवचनों, महात्माओं के उपदेशों से एक ही बात की शिक्षा मिलती है और वह यह कि इस दुनिया में कर्म ही प्रधान है सुख की प्रत्याशा में प्राणी न तो वर्तमान में जी पा रहा है और न ही

भविष्य को संवार पा रहा है। सुख को जहाँ तक मैंने समझा है सुख एक अनुभूति है। सुख जैसे विषय पर बहुत सी पुस्तकें उपलब्ध हैं। जैसे चिंता छोड़ो सुख से जिओ एक अन्य पुस्तक है जिसका शीर्षक है सुख यहाँ। यदि ध्यान से देखा जाय तो दुःख के बिना सुख की कल्पना ठीक उसी प्रकार है जैसे रात के बिना दिन की श्र

### चिंता ही दुःख का मूल कारण

खोना-पाना, मिलना-बिछुड़ना, धर्म-अधर्म, पति-पत्नी, न्याय-अन्याय, दूसरे के बिना अस्तित्व हीन भी हैं। अब सबसे बड़ा प्रश्न क्या है? सुख ऐसे शब्द हैं जो न केवल एक दूसरे के पोषक हैं बल्कि दूसरे शब्दों में एक महसूस करने में बाधक है वह है चिंता। आज की तिथि में हर व्यक्ति किसी न किसी कारण से चिंतित है। चाहे संतान के कारण, चाहे स्वास्थ्य के कारण, पारिवारिक कलह के कारण या फिर अपनी महत्वाकांक्षाओं के कारण। परन्तु एक बात स्पष्ट है वह यह कि चिंता ही दुःख का मूल कारण है उसके रहते हुए न तो की कल्पना की जा सकती है और न ही सुख का अनुभव। चिंता कम करने के लिए चिंता के मूल में छिपी बात को जानना आवश्यक है। और वह है समस्या।

**एक समस्या कोई समस्या नहीं है। बस वह नजरिया ही समस्या है,**

जिससे हम समस्या को देखते हैं। हम और आप बचपन से ही जीवन की सभी विचारधाराओं से सम्बंधित विषयों पर निर्णय लेते आये हैं, क्या ऐसा नहीं है? फिर आज भय किस बात का? जब भी आप चुनौती का सामना कर रहे हों, स्वयं से प्रश्न करें? क्या यह पहला अवसर है जब हम किसी चुनौती का सामना कर रहे हैं? क्या यह अंतिम अवसर है जब हम किसी चुनौती का सामना कर रहे हैं? ध्यान रखिये दोनों प्रश्नों का उत्तर हमेशा न ही में मिलेगा। यह उत्तर ही किसी समस्या

से निबटने के लिए और परिस्थिति को बेहतर बनाने के लिए पर्याप्त ऊर्जा है।

यदि निष्पक्ष होकर देखें तो समस्याएं हमारी अपनी पैदा की हुई ही होती हैं। जिनका समाधान है मुस्कराकर जिन्दगी को जीना। जिनको मुस्कराकर गम का घूँट पीना आ जाता है, उन्हें सुख की किरण भी दिखाई देने लगती है। इसीलिये कहा जाता है।

मुस्करा कर जिनको गम का घूँट पीना आ गया, यह हकीकत है, जहाँ में उनको जीना आ गया।

(यादें कुछ खट्टी कुछ मीठी से साभार )

## समाचार भारती

### ‘जागर श्यामच्या कथाचा’ कार्यक्रम

हेलस (महा –जालना) की अ.भा. साने गुरुजी कथा माला शाखा की ओर से जागर श्यामच्या कथांचा (श्याम की कथाओं की जागृति) यह कार्यक्रम दि. १७ जुलाई २०२३ प्रारंभ हो गया है । निर्मित राजेंद्र जोशी की तथा अभिवाचन उपविभागीय अधिकारी अंजली धानोरकर ने किया है । ४२ दिन ४२ कथाओं को शिक्षको के भेजा जाएगा । कथा परिपाठ में इन्हें सुनाया जाएगा और इन पर ऑनलाईन परीक्षाएं ली जाएगी । विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें ।

कल्पना हेलसकर मो. ९४२००३६९३५

### मूर्तिजापुर आंतर भारती की ओर से मणिपुर हिंसाचार निषेध

मूर्तिजापुर : आंतर भारती शाखा तथा सेवाभावी संस्था की ओर से मणिपुर हिंसाचार को लेकर निषेध-मोर्चा निकाला गया । सर्वस्तरीय समाज उपस्थित था ।

– सुधाकर गौरखडे

## काकोरी घटना: एक बोध

- अड. प्रमोद शहा , सोलापूर.

अगस्त महिना और विशेषकर ८, ९, १० अगस्त के ये दिनांक ऐतिहासिक दृष्टि से बड़े मायने रखते हैं। अगस्त महिने का उल्लेख होते ही हमें 'चले जावो' और 'स्वातंत्र्य दिन' की तुरंत याद आ जाती है। एक बात का यहाँ उल्लेख मुझे करना पड़ेगा कि ९ अगस्त १९२५ की घटना भी संस्मरणीय रही है। उस समय एक क्रांतिकारी संगठन कार्यरत थी, जिसका नाम हिंदुस्थान सोशलिष्ट रिपब्लिकन असोशिएशन था। इसके सक्रिय सदस्य राम प्रसाद बिस्मिल, अशफक उल्लाखान, चंद्रशेखर आजाद, केशव चक्रवर्ती, सचिंद्र बक्षी, मुरारी शर्मा, मुकुंदी लाल, मन्मथनाथ गुप्ता और बनवारीलाल थे। ये सारे कट्टर स्वातंत्र्य सेनानी थे। स्वतंत्रता संग्राम सक्रिय के लिए इन लोगों के पास पैसों का अभाव था। बिस्मिल तथा खान के दिमाख में एक बात सूझी। सरकारी खजिना लूटने की योजना उन्होंने सबके सामने रखी। उससमय पोस्ट ऑफिस में जमा पैसा रेल से ले जाने की बात उन्हें मालुम हुआ। उसीको लूटने का इन लोगों ने ठान लिया। ९ अगस्त १९२५ की बात है। जिस ट्रेन में उसदिन पोस्ट ऑफिस का पैसा ले जा रहे थे, ये सारे क्रांतिकारक उसपर चढ़ गये। रेल की चेन खींची और रेल रोक दी। रेल काकोरी (लखनौ) के पास रूकी। क्रांतिकारकों ने बड़ी हिम्मत से सेक्युरिटी को डरा-धमकाकरे गोलियाँ चलाते हए

तिजोरी फोड डाली। सारा खजिना १ मिनट में लूटकर वहाँ से निकल गये थे।

इस लूट के पीछे एकमात्र उद्देश्य था। देश को स्वतंत्र करने की तीव्र इच्छा इसी संपत्ति से वे अंग्रेजों के विरुद्ध अपनी सशस्त्र लड़ाई करना चाहते थे। मार्ग गलत था पर गंतव्य का उद्देश्य अच्छा था। परिणामस्वरूप उनमें से कईयों को फाँसी दी गयी और कई लोगों को दीर्घकालीन कारावास भी भोगना पड़ा। ध्यातव्य बात यह थी कि ट्रेन में इन लोगों ने किसी भी भारतीय को बिलकुल लूटा नहीं था। बिटिशों में दहशत फैलाने का एक मात्र उद्देश्य रहा। अनेक आरोपों के साथ उन पर केस चला। १९२७ तक यह मुकदमा उनपर चलता रहा। इनमें से रामप्रसाद बिस्मिल अशफक उल्लाखान, रोशनलाल तथा राजेंद्र नाथ लहिडी को फाँसी की सजा मिली थी। इन में प्रमुख आरोपी रहे चंद्रशेखर आझाद। अंग्रेजों से बचकर वे भूमिगत रहे। अंग्रेजों के वश होने की इच्छा उनकी नहीं हुआ। २७ फरवरी १९३१को अलाहाबाद में उन्होंने खुद पर गोली चलाकर हौतात्म्य स्वीकार किया और भारतीयों के लिए एक उदाहरण बन गये।

ऐसे कई किस्से स्वतंत्र्यप्राप्ति को लेकर बहुत सारे नौजवानों ने अपने प्राणों की आहुति दी है और उनका आज स्मरणकर सामने आनेवाले समस्याओं से जूझने की प्रेरणा हमें लेनी चाहिये।

## वृद्धावस्था में व्यस्त रहे-मस्त रहे

- काली प्रसाद जायसवाल, कोलकाता

उम्र के एक पड़ाव पर आकर व्यक्ति को लगता है जैसे सब कुछ थम गया, सब कुछ ठहर-सा गया हो। पर ऐसा नहीं है। वृद्धावस्था भी उम्र के अन्य दौरों की तरह एक दौर है जिसका सामना हर व्यक्ति को करना पड़ता है। उम्र के इस पड़ाव पर पहुंचे कुछ लोगों के बावजूद भी अधिकांश की झोली खाली है। सिर्फ पैसे से ही नहीं प्रेम के दो बोल से भी उनमें से कुछ को अपनों के बीच परायापन मिल रहा तो कुछ परायों के बीच स्नेह की दो बूंदें तलाश रहे हैं और इसे बोझ मानते हुए अपने अकेलेपन में घुटते रहते हैं। आजकल बुजुर्गों का ख्याल कौन रखता है, दिवाली के जले दिये संभाल कर कौन रखता है ! इसके बावजूद कुछ व्यक्ति वृद्धावस्था को भी उम्र के अन्य चरणों की तरह उपभोग करते हैं। उम्र बढ़ने का मतलब खालीपन व बेकार होना नहीं है बल्कि कुछ करने का समय है जब आप जिम्मेदारी से मुक्त हैं और आपको समय की कोई कमी नहीं तो आप अपने मन के अनुसार जो चाहे कर सकते हैं। अपने जीवन के बिताये लम्बे समय के अनुभव से लोगों का मार्गदर्शन कर सकते हैं। बूढ़ा पेड़ फल भले ही न दे छाया तो देता ही है, बुजुर्गों के तजुर्बों की अहमियत हमेशा परिवार, समाज को रही है और रहेगी। काम जायेगी बुजुर्गों की नसीहतें ही, उनके पास तजुर्बों की पिटारी है। आइये, उम्र के इस दौर को खालीपन से बचाने और खुशहाल रहने के लिए देखें आप हम क्या कर सकते हैं।

१. सामाजिक बने। पहले तो आपके पास सामाजिक गतिविधियों के लिए समय नहीं था पर अब किसी सामाजिक संस्था से जुड़कर सेवा कार्य करें। २. अपने दोस्तों की संख्या बढ़ायें, किसी से मिले तो प्रेम से मिलें, याद रखें फल पकने के बाद ही मीठार हो पाता है। हर वक्त स्वास्थ्य का रोग न रोया करें। प्रकृति का नियम है कि एक वक्त उम्र बढ़ने के साथ शरीर दुर्बल होगा। ४. कार्य से अवकाश प्राप्त होने के पश्चात् भी आप कोई पार्ट टाइम कार्य कर सकते हैं इससे आप व्यस्त भी रहेंगे और जामदनी का जरिया भी बना रहेगा। ५. अगर आप धार्मिक हैं तो नियमित धार्मिक स्थल (मन्दिर) जाने का नियम बनायें। ६. नये शौक अपनायें या पुराने शौकों को जगायें, संगीत सुनना, पुस्तकें पढ़ना, कवितायें लिखना, बागवानी करना, टी.वी. देखना जो भी आपको अच्छा लगे। ७. घर के कामों में मदद करें, बच्चों को स्कूल छोड़ना, बैंक के कार्य या जो भी कार्य आपको सुविधाजनक लगे उन्हें करके अपने को व्यस्त रखने की चेष्टा करें, विशेषकर आप अपना काम स्वयं करने की कोशिश करें। ८. जब व्यक्ति खाली होता है तो वह दूसरे के कामों में अधिक टोका-टाकी करता है, अक्सर परिवारों में यह लड़ाई की वजह देखी गई है, इसलिए परिवार में दखलअन्दाजी कम करें और हर

किसी को अपने अनुसार चलाने का प्रयत्न न करें। ६. आप अपनी जरूरतों को कम करने की चेष्टा करें, जिंदगी उसीकी खूबसूरत है, जिसकी थोड़ी सी जरूरत है। १०. आपके वृद्धावस्था तक पहुंचते-पहुंचते आपके बच्चे जवान हो चुके होते हैं और उनकी अपनी जिम्मेदारियां होती है। आज व्यस्तताभरी जिन्दगी में जहाँ अपने लिए भी समय निकालना मुश्किल होता है वहीं उनसे अधिक आशा रखकर न चलें कि वह आपके टाइम पास के लिए समय निकाल पायेंगे, अगर आप उनसे कम आशा रखेंगे तो खुद भी खुश रहेंगे और परिवार वाले भी खुश रहेंगे।

वृद्धावस्था यानि उम्र के इस आखिरी पड़ाव पर जाकर जहाँ से मंजिल (मृत्यु) कुछ ही दूरी पर रह जाती है क्यों न हम बचे हुए दिनों का उपभोग करते हुए जियें यह जानते हुए कि मृत्यु अनिवार्य है फिर क्यों नहीं बचे हुए दिनों का आनन्द से मनुष्य अपनी वृद्धावस्था में अपने अनुभव एवं आध्यात्मिक ज्ञान के शिखर पर होता है। यही समय है जब जीवन के रिश्ते-नाते, सुख-दुख का आकलन आप संत कबीर की तरह निरपेक्ष होकर कर सकते हैं।

मरने के बाद अपने ही मिलायेंगे  
खाक में, है अपनों से रंजिश ये भुलाये  
रखिए। हर जिंदगी की मौत मुकर्रर है  
एक दिन, इस जिन्दगी को तब तक  
बहलाये रखिए।।

काव्य भारती

## सिसकते चेहरे

मैंने देखा है उन सिसकते लम्होंको सौ बार  
बदलते चेहरों को

हर जिस्म थका-थकासा है  
हर आह थमीथमी सी

कोई चाँदनी चमकती नजर नहीं आती  
किसी खुशबू की महेकती आहट नहीं आती

सिर्फ इत्रों की तमन्ना करते हैं  
यहाँ तो हर एक के हाथ खून से रंगे हैं

गंदी गलियों भी कभी कभी अटक जाते हैं  
अदामी भी भले

क्या मालुम इनमें भी कोई इन्सान मिले  
अगर मिले भी तो खुले दिलसे कब मिले।

इसी घुटन को दिल में छिपाकर ही सही  
दौर-ए जिंदगी पार कर चलो  
जिंदगी भर पत्थरीली राह भी बहुतसी चले

अब जी करता है, सब थम जाए  
सब रुक जाए, सिसकते लम्हे चुप सो  
जाए।

डॉ. नसीम पठान  
मो. ९८५०३०१९२६

## प्रबोधन पर्व के प्रगल्भ, कृतिशील कार्यकर्ता प्रा. विलास वाघ

— प्रा. विलास आढाव

फुले-आंबेडकरी आंदोलन के निष्ठावान सूरमा तथा कर्मनिष्ठ कार्यकर्ता, प्राध्यापक के रूप में विलास वाघ सर की ख्याती सारे महाराष्ट्र तथा राज्य के बाहर भी दूर तक फैली हुई है। सावित्रीबाई फुले, पुणे विद्यापीठ में सतत शिक्षा और ज्ञानविस्तार विभाग में प्रा. विलास वाघ सर सहायक संचालक पद पर भी कार्यरत थे।

पुणे विद्यापीठ के कार्यक्षेत्र धुळे, जळगाव, नासिक, अहमदनगर और पुणे इन पांचो जिले से संलग्न महाविद्यालयों के माध्यम से मुहल्ले बस्ती और झुंगी-झोपडी में साक्षरता प्रसार के साथ ही जाणीव जागृति के लिए किए हुए कार्य आज भी हम जैसे अनेक युवा प्राध्यापकों के दिशादर्शक है। कार्यक्रम तथा शिविर के निमित्त से हम मुहल्ले- बस्ती के कार्यक्रमों में जाते थे तथा आज भी ग्रामीण और झुंगीझोपडी के प्रौढ कार्यकर्ता मेरे पास संदेश देते हैं कि “ विलास सर को हमारा जयभीम कहना” आज भी वाघ सर के प्रति इन कार्यकर्ताओं का प्रेम देखकर, सुनकर उनके निम्न-स्तरीय लोगों के प्रति किए हुए कार्यों का ही यह परिणाम है ऐसा अनुभव मुझे एकदम पास के देखने मिला वाघ सर से कार्यों का वस्तुनिष्ठता से विश्लेषण करना अति

आवश्यक लगा।

ज्ञानदान के क्षेत्र में आन्तरराष्ट्रीय स्तर के विद्यापीठ के रूप में सावित्रीबाई फुले विद्यापीठ की गणना होती है। इसी विद्यापीठ में सहायक संचालक पद पर सेवा प्रारम्भ करने से पहले विद्यापीठ के पिछड़े वर्गीय कर्मचारियों की सामाजिक सांस्कृतिक और शैक्षणिक जाणीव जागृति यह रूकी हुई अवस्था में थी। उस कुंठित तथा रूकी हुई परिस्थिति को प्रा. विलास के प्रगल्भ नेतृत्वगुणों के कारण गति प्राप्त हुई। फुले-आंबेडकरी आंदोलन का व्रत तथा उत्तराधिकार धारण किए हुए प्रा. वाघ सर ने विद्यापीठ के विखरे हुए कर्मचारियों के एकत्र लाकर उनमें फुले-आंबेडकरी आंदोलन का बीजारोपण करके पिछड़े वर्ग के कर्मचारियों में स्वयं के बारे में जो न्यूनता थी उन सबको पहले समाप्त करके उनमें स्वाभिमान से सिर उठाकर जीने को प्रवृत्त किया। वैचारिक प्रबोधन और कार्यकर्ताओं के साथी दिवंगत पी.आर. काकडे, कृपासागर में श्राम, एम. जी. शिंदे, विठ्ठल साठे, एम.एस. कांबळे, एस.आर. गायकवाड, चन्द्रकान्त आढाव, सुरेश वाघमारे, डी.जी. कांबळे जैसे बहादुर कार्यकर्ता सर के संपर्क में आए। वाघ सर की १९७९-८४ के काल में हुए सामाजिक

उत्थान का अभियान आज भी अनेकों को ऊर्जा देता है, इसका भी प्रमाण विद्यापीठ में कार्य करते हुए दिखता है। उस काल में विद्यापीठ में हर बुधवार को ऑफिसर्स मीटिंग होती थी। उस मीटिंग में तत्कालीन कुलसचिव, पिछड़े वर्गीय कर्मचारी तथा अधिकारियों की समस्याओं के विषय में समर्थक होते थे। बड़ी समझदारी से पिछड़े वर्गियों की अनेक समस्याएँ कुशलता से सुलझाई वाघसर की कार्यकर्ता, प्राध्यापक के रूप में पहिचान आज भी विद्यापीठ भूला नहीं है। यह उनके अष्टपैलू (सर्वज्ञ) व्यक्तित्व की कमाई है।

जिस काल में विद्यापीठ में “ फुले-आंबडेकर” के नाम का उल्लेख करना की पिछड़े वर्गीय कर्मचारियों को कठिन होता था उस समय वाघ सर ने विद्यापीठ के चतुर्थ, तृतीय, द्वितीय और प्रथम श्रेणी के कर्मचारियों की श्रेणी बड़ी कुशलता से बनाई। आज भी विद्यापीठ के सेवानिवृत्ति के लिए आए हुए कर्मचारी इस बात की यादें बताते हैं। पुणे विद्यापीठ के प्रशासन भवन के सामाने की छोटीसी (तळयाकाठची) टपरी आज भी इन बातों की साक्षी है। पूरे विद्यापीठ की ओर से सामाजिक परिवर्तन ओर प्रबोधन की दृष्टि से वाघ सर के कार्य आज भी उल्लेखनीय है।

पुणे विद्यापीठ के तत्कालीन कुलगुरु डॉ. राम ताकवले तथा प्रौढ शिक्षा विभाग के संचालक स्व.डॉ. भालचन्द्र फडके

सर के साथ प्रा. विलास वाघ सर से प्रगतिशील और परिवर्तनवादी आंदोलन को ताकत देने की दृष्टि से किए गए प्रबोधन कार्य विद्यापीठ के सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास में एक मील का पत्थर माना गया। वाघ सर ने निर्भय, निःस्वार्थ रूप से कोई भी इच्छा-आकांक्षा न रखते हुए किए हुए काम को ध्यान में रखकर पुणे-विद्यापीठ ने १० फरवरी २०१३ को वर्धापन दिन पर उन्हें जीवनसाधना गौरव पुरस्कार देकर अपना उत्तरदायित्व जताया। यह कार्य विद्यापीठ तथा वाघ सर के संबंधों के इतिहास का गठबंधन कहना पड़ेगा। पुणे विद्यापीठ और प्रा. विलास वाघ यह समीकरण १९७९ से ८४ के काल में इतने गहरे हो गए थे कि उन ऋणानुबंधों का आलेख उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया है।

जातिनिर्मूलन, दलित पंथर, नामपरिवर्तन आंदोलन, आन्तरजातीय विवाह, खानाबदोश विमुक्त तथा महिला विषयी आंदोलन इत्यादि आंदोलनों के संक्रमण काल में दृढ़ता तथा ठोस समर्थन देकर वाघ सर ने अपनी कार्यकुशलता सिद्ध की है। वैश्याओं के बच्चों के लिए भी उन्होंने संस्था शुरू की। दो आश्रमशालाएं चार वसतिगृह और धुळे में समाजकार्य महाविद्यालय शुरू करके प्रशिक्षित समाजसेवकों के लिए अवसर उपलब्ध कराए। इसके अतिरिक्त सुगावा प्रकाशन संस्था प्रारम्भ कर के प्रकाशन के माध्यम से

परिवर्तन आंदोलन को गति दी । उनके कार्यों का गौरव करते हुए २००३ में “ इंटरनेशनल मिशन कॅनडा ” इस पुरस्कार से उन्हें सन्मानित किया गया । उषाताई वाघ मॅडम से आन्तरजातीय विवाह करके बाबासाहेब के जाति तोड़ने के कार्यक्रम का पहल करने वाले भीमसैनिक कहलाकर अधिक कृतिशील लगते हैं । जातीयता तोड़ने के लिए उन्होंने पुणे विद्यापीठ के डॉ. पंडित विद्यासागर, डॉ. प्रदीप गोखले, प्रा. तेज निवळीकर, लता चौधरी, विठ्ठल साठे आदि के साथ संजय पवार, अरुण खोरे जैसे अनेक सहकारी मित्रों के साथ आन्तरजातीय विवाह आंदोलन को बढ़ावा मिले इसलिए नेतृत्व करके जातीयता का निर्मूलन इस डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के कार्यक्रम को अधिक गति देने का प्रयत्न किया ।

वाघ सर ने सुगावा प्रकाशन के माध्यम से फुले आंबेडकरी आंदोलन की प्रथा तथा परंपरा को यशस्वी रूप से निभाया फुले-आंबेडकरी विचारों की सैध्दान्तिक रचना करने के साथ उन्होंने निम्न, शोषित, वंचित-पीडित, दीन, दुर्बलों के लिए न्याय तथा सामाजिक समता प्रस्थापित कराकर विस्थापितों को प्रस्थापित कराने का “आदर्श कार्यकर्ता” के रूप में किया हुआ कार्य फुले आंबेडकरी आंदोलन के युवा प्राध्यापकों का निश्चित मार्गदर्शक है । वाघ सर ने सैध्दान्तिक रचना

तथा प्रत्यक्ष कृति का हुबहू गठबंधन करके समाजकार्य का नया आदर्श प्रगतिशील तथा परिवर्तन वादी आंदोलन के सामने रखा । यह सर का कार्य स्पष्ट रूप से अधोरेखित करने जैसा है । निम्न वर्गीय दीन दलितों के दुःखों से दुःखी होने वाला और उनके सुखों से सुखी होने वाला दयालू मित्र के रूप में भी सर की प्रतिभा आज भी एकाध तरुण कार्यकर्ता को शरमा देगी, ऐसी है । प्रा. विलास वाघ सर जैसे सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और प्रकाशन के कार्य में हिमालय की तरह दृढ़ता से खड़े रहने वाले व्यक्तित्व के साथ उषाताई वाघ मॅडम सहधर्मिणी भी उतनी ही धीरता से खड़ी है । यह अनमोल है ।

हिन्दी भाषान्तर : मधुश्री आर्य  
मो. ६३७७२३७९६०

**यदि किसी काम को करने में  
डर लगे तो याद रखना  
यह संकेत है, कि आपका काम  
वाकई में बहादुरी से भरा हुआ है।**

**सिर्फ मरी हुई मछली  
को पानी का बहाव चलाती है,  
जिस मछली में जान होती है  
वह अपना रास्ता खुद बनाती है।**

## पर्यावरण सुरक्षा के लिए विकास को बढ़ावा देना होगा

- डॉ. सत्यनारायण सिंह (लेखक रिटायर्ड आई.ए.एस. अधिकारी हैं)

हमारे पर्यावरण की स्थिति प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग के कारण दिन प्रतिदिन गिरती जा रही है। बेहतर भविष्य के लिए, पर्यावरण की सुरक्षा के लिए विकास को बढ़ावा देना है। पर्यावरण बचाओं, जीवन बचाओं, पृथ्वी बचाओं, धरती को स्वर्ण बनाना है पर्यावरण दिवस मनाना है। इसी उद्देश्य के साथ १९७२ से १०० देश मिलकर प्रतिवर्ष ५ जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाते हैं। वार्षिक कार्यक्रम संयुक्त राष्ट्र के द्वारा घोषित विशेष थीम विषय पर आधारित होता है। पर्यावरण के बारे में जागरूकता और प्रोत्साहन देने हेतु सकारात्मक सार्वजनिक गतिविधियां वार्षिक अभियान का अंग रहती है। सन् २०२० की थीम जैव विविधता का जश्न मनाये दशकों से विलुप्त पौधे व जानवरों की प्रजातियों का बचाना है।

विश्व पर्यावरण दिवस २०२१ की थीम है सब मिलकर फिर से कल्पना करें, फिर से बनायें, फिर से पुनर्स्थापित करें दिवस को मनाने का। ८ देश पर्यावरण के मुद्दों के बारे में आम लोगों को जागरूकता फैलाने के लिए विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। विभिन्न समाज एवं समुदायों के आम लोगों को पर्यावरण सुरक्षा उपायों में सक्रिय एजेंट बनाने के लिए प्रोत्साहित

किया जाता है तथा सुरक्षित, स्वच्छ व अधिक समृद्ध भविष्य का आनन्द लेने के लिए, आसपास के परिवेश को सुरक्षित और स्वच्छ बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

पर्यावरण के मुद्दे, भोजन की बरबादी व नुकसान, वनों की कटाई, ग्लोबल वार्मिंग का बढ़ना, इत्यादि को बताने के लिए विश्व पर्यावरण दिवस मनाने की शुरुआत की गयी थी। पर्यावरण संरक्षण के दूसरे तरीकों सहित बाढ़ से बचाने के लिए सौर जलतापक, सौर स्रोतों के माध्यम से ऊर्जा उत्पादन, नये जल निकासी तंत्र का विकास, प्रवरल भित्ति को बढ़ावा, मैनाग्रोव का जीर्णोद्धार आदि के इस्तेमाल के लिए आम लोगों को बढ़ावा देना, सफलतापूर्वक कार्बन उदासीनता को प्राप्त करना, जंगल प्रबन्धन पर ध्यान देना ग्रीन हाउस गैसों का प्रभाव घटाना, बिजली उत्पादन के लिए हाइड्रो शक्ति का इस्तेमाल, निम्नकृत भूमि पर पेड़ लगाने के द्वारा बायो-ईंधन के उत्पादन को बढ़ावा देना पर जोर रहा है।

पर्यावरण दिवस के मुख्य स्लोगन है - धरा तो जीवन योग्य बनाना है, धरा को हरा-भरा बनाना है, पर्यावरण को सुरक्षित बनाना है, धरती को स्वर्ण बनाना है, देश को स्वच्छ बनाना है, पेड़ लगाकर महान बनाना

है, पर्यावरण का महत्व सबको समझाना है, धरती को प्रदूषणमुक्त बनाना है।

२०२१ के तीन मुख्य संदेश है। अगर हम पर्यावरण का नाश करेंगे तो हमारे पास समाज भी नहीं बचेगा, मानव जीवन खतरे में। हम सब की समझदारी इसमें हैं कि पेड लगायेंगे, पेड बचायेंगे, पर्यावरण सुरक्षा की जिम्मेदारी लेंगे, अपनी दुनिया को साफ और हरा रखेंगे, स्वच्छ शहर, ग्रीन सिटी। विज्ञान का कद इतना नहीं बढ़ाओगे कि पर्यावरण प्रदूषण करके प्राकृतिक आपदाओं से बच जाओगे। पर्यावरण प्रदूषण फैलाकर प्राकृतिक आपदाओं से कैसे बच पाओगे। यह भी स्पष्ट संदेश है कुछ भी नहीं होगा केवल विश्व पर्यावरण दिवस मनाने से, पर्यावरण शुद्ध व स्वच्छ होगा, पेड लगाने से घर से अच्छी दुनिया में कोई जगह नहीं है। पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी ने पर्यावरण की बिगड़ती स्थिति एवं उसका विश्व के भविष्य पर प्रभाव विषय पर कहा था, पर्यावरण सुरक्षा की दिशा में यह भारत का प्रारम्भिक कदम हैं, हम प्रतिवर्ष ५ जून को पर्यावरण दिवस मनाते हैं, उसकी सफलता सुनिश्चित करने के साथ सालभर काम करते हैं। पर्यावरण संरक्षण अधिकतम १९ नवम्बर १९८६ से लागू हुआ, जलवायु, भूमि इन तीनों से सम्बन्धित कारक तथा मानव, पौधे, सूक्ष्म जीव, अन्य जीवित पदार्थ आदि पर्यावरण के अन्तर्गत आते हैं।

२०२१ की थीम परिस्थिति तंत्र की बहाली मुख्य है तालाब, नदी, पोखर को प्रदूषित नहीं करें, जल का दुरुपयोग नहीं करे तथा इस्तेमाल के बाद बन्द करें, बिजली का अनावश्यक उपयोग को बंद करे। कूड़ा-कचरा को डस्टबिन में फेंके और दूसरों को इसके लिए प्रेरित करें, इससे प्रदूषण नहीं होगा। प्लास्टिक और पॉलिथिन का उपयोग बंद करें और उसके बदले कागज के बनें झोले या थैले का प्रयोग करें। पशु-पक्षियों के प्रति दयाभाव रखें, नजदीकी कामों के लिए साईकिल का उपयोग करें।

सम्पूर्ण मानवता का अस्तित्व प्रकृति पर निर्भर है। इसलिए एक स्वस्थ एवं सुरक्षित पर्यावरण के बिना मानव समाज की कल्पना अधूरी है। प्रकृति को बचाने के लिए संकल्प लेना होगा, वर्ष में कम से कम एक पौधा अवश्य लगायें और उसे बचाए तथा पेड-पौधों के संरक्षण में सहयोग करें। घर की बालकनी, क्यारी, गमले, बगीचे से पौधे को ध्यान से देखें, उनका पालन पोषण करें, अपने समूह में चिंतन, मनन, विमर्श करें। राष्ट्रपति बाइडन ने आंतरराष्ट्रीय समझोते के समय सही कहा था, कोई भी राष्ट्र अकेले ही जलवायु परिवर्तन की समस्या का समाधान नहीं कर सकता। हर देश को समाधान का हिस्सा बनना होगा, हम एक दूसरे पर निर्भर हैं। (लेखक का अपना अध्ययन एवं अपने विचार हैं। - वाट्सप से साभार )

कालीदास को यह अभिमान हो गया कि मैं बहुत बड़ा ज्ञानी हो गया हूँ। एक बार यात्रा में उन्हें प्यास लगी। उन्होंने देखा कि पास में ही एक बूढ़ी महिला कूप के पास पानी भर रही है, कालीदास ने कहा 'मां मुझे पानी देगी तो तुझे खूब पुण्य मिलेगा। वृध्दा स्त्री ने कहा, मैंने तुझे पहिचाना नहीं, कृपया तू तेरा परिचय दे फिर मैं तुझे पानी दूंगी। फिर कालीदास ने परिचय देना प्रारम्भ किया। कालीदास ने कहा, मैं यात्री हूँ, वृध्दा ने कहा यात्री तो बस दो ही है। एक चांद दूसरा सूर्य जो रात दिन चलते ही रहते हैं।

कालीदास ने कहा मैं अतिथि हूँ, पानी मिलेगा ? वृध्दा ने कहा-अरे अतिथि तो बस दो ही हैं, एक धन दूसरा यौवन वे चले जाते हैं। सच बता तू कौन है ? कालीदास ने कहा मैं सहनशील हूँ अब तो पानी मिलेगा ? वृध्दा ने कहा, सहनशील तो सिर्फ दो है एक धरती, एक पेड़। धरती जो पुण्यवान लोगों के साथ साथ पापी लोगों का भार लिए हुए है, और पेड़ जिन्हें पत्थर मारे तो भी मधुर फल ही देते हैं। कालीदास अब निराश हो गए। कालीदास ने कहा मैं जिद्दी हूँ। वृध्दा ने कहा-नहीं तू जिद्दी कैसे ह सकते हो- जिद्दी तो सिर्फ दो हैं एक नाखून और एक बाल कितना ही काटें तो फिर बढ़ जाते हैं। कालीदास अब कुछ भी बोलने की मनःस्थिति में नहीं थे। उन्होंने उस स्त्री के

पैरों पर सिर रखकर पानी के लिए याचना करने लगे। बूढ़ी ने कहा, उठ बच्चे, आवाज सुनकर कालीदास ने ऊपर देखा तो उस स्त्री के साथ पर साक्षात सरस्वती देवी खड़ी थी। कालीदास नतमस्तक थे। सरस्वती देवी ने कालीदास से कहा, शिक्षा से ज्ञान आता है अहंकार नहीं।

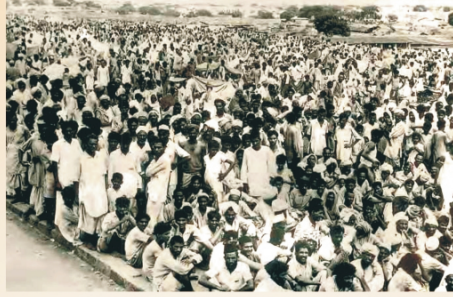
विद्या के बल से मिला मान, सम्मान और प्रतिष्ठा को ही तूने सर्वस्व समझ लिया और उसका तुझे अहंकार हो गया। तेरी आंखे खोलना आवश्यक था। कालीदास ने अपनी गलती समझ ली और भरपूर पानी पीकर आगे की यात्रा पर निकले तात्पर्यः विद्वता पर कभी गर्व न करे पढते समय मिला एक सुन्दर लेखः लिखने वाले का आभार

हिन्दी भाषान्तर : मधुश्री आर्य  
मो. ६३७७२३७१६०

**किताबों की अहमियत  
अपनी जगह है जनाब,  
सबको वही याद रहता है  
जो वक़्त और लोग सिखाते हैं..**

**जिंदगी जीने के दो तरीके बना लो,  
एक वो जो पसन्द है  
उसे हासिल करो, दूसरा वो जो  
हासिल है उसे पसंद करो।**

स्वतंत्रता आंदोलन संबंधित कुछ चित्र



अगस्त 2023 पंजीकरण 11257/66

डाक पंजीकरण : L2/RNP/OMD/71/2021-23



## राष्ट्रीय आंतर भारती संस्था के कोषाध्यक्ष प्राचार्य डॉ. उमाकांत चनशेट्टी को पुरस्कार

म.रा.गांधी फोरम तथा पत्रमहर्षि रंगा अण्णा वैद्य स्मृति प्रीत्यर्थ डॉ. चनशेट्टी सहित पांच मान्यवरों को पुरस्कार दिया गया। डॉ. सुगनचंद बरंठ, मालेगाव, प्रा. एम.एन. नवले, सोलापुर, संकेत मुनोत, पुणे एवं सम्राट फडणवीस, पुणे ये अन्य चार पुरस्कार मूर्ति हैं। डॉ. चनशेट्टी के ५५ शोध निबंध विविध नियतकालिका तथा संगोष्ठियों में अवदानित हैं। बोरामणी सोलापुर में नई तालीम संकल्पना को साकार करते हुए उन्होंने अनेक गतिविधियाँ जारी रखी हैं।

उपर्युक्त ग्लोबल व्हिलेज स्कूल की गतिविधियों के साथ साथ हाल ही में उन्होंने वहाँपर कोरोना काल में अनाथ हुए बच्चे तथा लडका, लडकी तथा बहुओं के मृत्यु के बाद निराधार हुए नाना नानी इनके लिए एकसाथ रहने के लिए एक आनंददायी प्रकल्प भी शुरू करने का उनका संकल्प है, यह स्तुत्य है।



संभाजी नगर :  
आंतर भारती शाखा  
की ओर से  
“चित्र को रंग देना  
प्रतियोगिता” में  
सहभागी छात्र-छात्राएं

आंतरभारती,  
पुणे शाखा की  
ओर से मणिपुर  
हिंसा के संदर्भ में  
ली गयी निषेधसभा  
के अवसर पर  
एकत्रित सदस्य

